Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

बिहार में ध्रुपद गायकी की परंपरा एवं इस परंपरा को समृद्ध करने में पं. क्षितिपाल मल्लिक का योगदान

Diwakar Narayan Pathak*

Principal, Department of Music, Pandit Ugam Pandey College, Motihari, B.R.A. Bihar College, Muzaffarpur

सार – ***भारतीय संगीत की परंपरा संपूर्ण विश्व की संगीत परम्पराओं से प्राचीन एवं समृद्ध रही है, जिसकी प्रमाणित जानकारी भारतवर्ष में रचित वेदों, पुराणों एवं ग्रंथों से प्राप्त होती है। ललित कलाओं में संगीत का विशेष एवं उच्च स्थान रहा है। कला सदैव परिवर्तनशील रही है, जिसका प्रभाव संगीत में भी प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। प्राचीन समय में संगीत, ईश्वर की उपासना का एक सशक्त माध्यम था, परन्तु समय और समाज ने इसे लोकरंजन का भी विषय बनाया। इस प्रकार वर्तमान समय तक इसमें कई परिवर्तन आये। सामगान से प्रबंध गायन, इसके बाद ध्रुपद-धमार का जन्म और इसी क्रम में ख़्याल, ठुमरी, ग़ज़ल, भजन एवं गीत आदि इसमें आये परिवर्तन एवं लोकप्रियता का ही परिणाम हैं।***

----------X----------

प्रस्तावना

भारतीय संगीत की परंपरा संपूर्ण विश्व की संगीत परम्पराओं से प्राचीन एवं समृद्ध रही है, जिसकी प्रमाणित जानकारी भारतवर्ष में रचित वेदों, पुराणों एवं ग्रंथों से प्राप्त होती है। ललित कलाओं में संगीत का विशेष एवं उच्च स्थान रहा है। कला सदैव परिवर्तनशील रही है, जिसका प्रभाव संगीत में भी प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। प्राचीन समय में संगीत, ईश्वर की उपासना का एक सशक्त माध्यम था, परन्तु समय और समाज ने इसे लोकरंजन का भी विषय बनाया। इस प्रकार वर्तमान समय तक इसमें कई परिवर्तन आये। सामगान से प्रबंध गायन, इसके बाद ध्रुपद-धमार का जन्म और इसी क्रम में ख़्याल, ठुमरी, ग़ज़ल, भजन एवं गीत आदि इसमें आये परिवर्तन एवं लोकप्रियता का ही परिणाम हैं।

मध्य काल में जब बाहरी देशों के राजाओं का आगमन भारत में हुआ, तब उनके साथ उनकी संस्कृति एवं कलाएं भी साथ में आयीं, जिसका प्रभाव भारतीय कला एवं संस्कृति पर पड़ा। इसी क्रम में पंद्रहवीं शताब्दी में ध्रुपद शैली प्रचार एवं प्रसार में आयीं। ध्रुपद शैली उस समय की सबसे लोकप्रिय शैली बन गई, परन्तु जब ख़्याल शैली का विकास हुआ तब ध्रुपद की लोकप्रियता प्रभावित होने लगी तथा यह ध्रुपद शैली केवल मंदिरों में ही सम्प्रदाय के लोगों द्वारा व्यवहार में लाया जाने लगा। ध्रुपद भारतीय शास्त्रीय संगीत की नींव रही है तथा पंद्रहवी से सत्रहवीं शताब्दी तक का समय ध्रुपद का स्वर्णिम युग रहा है। मुग़ल काल जब समाप्ति पर आया, तब सैनिया घराने के वंशज एवं कलाकार भारत के पूरब में आकार बसने लगे जहाँ कई रजवाड़ों में उन्हें संरक्षण प्राप्त हुआ। उन रजवाड़ों में बेतिया दरभंगा, डुमराव, गिद्धौर, टेकारी, फतुहा, पटना आदि का प्रमुख स्थान रहा है।

ध्रुपद की परम्परा व संरक्षण पर यदि दृष्टिपात करें, तो बिहार में बेतिया एवं दरभंगा के मलिक घरानों की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसमें दरभंगा घराने का सीधा सम्बन्ध स्वामी हरिदास बाबा एवं मियां तानसेन से रहा है। जहाँ एक ओर तानसेन के पुत्र वंश में वज़ीर ख़ाँ द्वारा ध्रुपद अंग के तंत्री वाद्यों की परंपरा विकसित हुई, वहीं पौत्री वंश में भूपत ख़ाँ द्वारा ध्रुपद गायन की परंपरा विकसित हुई। एक ही घराने की दो शैली, दो स्थानों में विकसित हुई, जिसमें तंत्री वाद्यों की परंपरा रामपुर एवं मैहर में और गायन की परंपरा दरभंगा में स्थापित हुई। दरभंगा में संगीत की इतनी समृद्ध परंपरा होते हुए भी यह घराना आज अपने परिचय का मोहताज हो कर रह गया है। दरभंगा घराने एवं घराने के वंशजों (पूर्व एवं बाद) में प्रारंभ से ही कई विद्वान हुए जिनकी ख्याति पूरे भारत वर्ष में हुई जैसे- पं.बच्चू मालिक, पं.क्षितिपाल मलिक, पं.यदुवीर मलिक, पं.महावीर मलिक, पं.घनारंग जी, पं.नरसिंह मलिक, पं.नरहरी पाठक आदि। दरभंगा घराने की शिष्य परंपरा में भी ऐसे कलाकार हुए

www.ignited.in

जिन्होंने ध्रुपद का प्रचार-प्रसार भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी किया जैसे- पं.रामचतुर मलिक, पं.विदुर मलिक, पं. अभय नारायण मलिक आदि। वर्तमान में भी इस घराने के कई कलाकार, घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, परन्तु वैसा नाम और प्रसिद्धि इस घराने को प्राप्त नहीं हो सका, जैसा कि पूर्व में था और वर्तमान में अन्य घरानों को मिला। इतिहास की गोद से वर्त्तमान समय तक ध्रुपद शैली को अपने कन्धों पर ढोता दरभंगा घराना आज के लोगों की दृष्टि में एक लुप्त घराना बन गया है।

बिहार में दरभंगा घराने के अतिरिक्त बेतिया घराने की परम्परा का भी ध्रुपद के संरक्षण में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। परन्तु बिहार में ध्रुपद के घरानों में दरभंगा घराना वरिष्ठ एवं प्राचीन रहा है।

19वीं शताब्दी के अंत तक ध्रुपद का स्थान ख़्याल लेने लगा और 20वीं शताब्दी में ख़्याल की लोकप्रियता ध्रुपद पर पूर्ण रूप से हावी हो चुकी थी। घरानों के निर्माण के बाद ख़्याल शैली और सुदृढ़ होने लगी तथा गायन का प्राचीन घराना ग्वालियर भी ख़्याल शैली को ही अधिक अपनाया। गायन के अन्य घरानों में भी ख़्याल शैली की ही लोकप्रियता बनी रही जिनमें आगरा, किराना, जयपुर, मेवाती, सहसवान, बनारस आदि प्रमुख रहे। जहाँ ख़्याल शैली इतनी विकसित एवं लोकप्रिय रही वहीं दरभंगा राज में बसे संगीतज्ञों ने ध्रुपद शैली को राजा एवं राज के संरक्षण में जीवित रखा तथा एक लम्बी श्रृंखला के बाद घरानेदार पद्धति में ध्रुपद वर्तमान समय तक जीवित रहा। इसी क्रम में दरभंगा घराने के कई गायक ध्रुपद गा रहे थे, परन्तु कुछ तकनीकी कारणों से ही यह शैली अपने स्तर पर नहीं पहुँच पा रही थी। समाज में भी ध्रुपद की लोकप्रियता न के बराबर थी, साथ ही आकाशवाणी एवं सम्मेलनों में भी यह शैली लुप्त सी हो गई थी। ध्रुपद के प्रस्तुतिकरण एवं लोकप्रियता पर विचार करते हुए दरभंगा घराने के महान ध्रुपद गायक पं.सियाराम तिवारी ने गायन की इस शैली में कई प्रयोग एवं शोध किए तथा इस शैली को प्रस्तुत करने एवं लोकप्रिय बनाने के लिए परंपरा में कुछ नयी चीजों को जोड़ते हुए एक अलग और नवीन गायन शैली विकसित की जिसे अधिकांश ध्रुपद गायकों एवं अन्य गायकों ने भी अपनाया। ध्रुपद गायन में स्वर लगाव एवं कंठ-संस्कार पर भी इन्होंने विशेष ध्यान दिया एवं अपने प्रस्तुतिकरण में गायन की अन्य शैलियों के साथ ध्रुपद-धमार को जोड़कर पंडितजी ने एक अलग और विशेष प्रकार का ढांचा कार्यक्रम के लिए तैयार किया था, जिसमें ध्रुपद-धमार अनिवार्य था।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध "गायन की दरभंगा परंपरा में स्व.पं.सियाराम तिवारी का योगदान" में दरभंगा की संगीत परंपरा एवं उसमें पं.सियाराम तिवारी के द्वारा किये गए योगदान का समग्र रूप से अध्ययन किया गया है, जिसे अध्ययन की सुविधा हेतु चार अध्यायों में विभाजित किया गया है, जो कि इस प्रकार हैः-

शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय "दरभंगा घराने का इतिहास" के अंतर्गत दरभंगा की भौगोलिक स्थिति, दरभंगा की राज्य परंपरा, दरभंगा में संगीत परंपरा का उद्गम तथा दरभंगा घराने की परंपरा-स्थापना एवं विकास से संबंधित अध्ययन किया गया है। साथ ही दरभंगा घराने के कुछ ध्रुपद गायकों का परिचय भी सम्मिलित किया गया है।

द्वितीय अध्याय "दरभंगा घराने की गायन शैली की विशेषताएँ" के अंतर्गत दरभंगा घराने की विशेषताओं को दो मुख्य बिन्दुओं के अंतर्गत विभाजित कर अध्ययन किया गया है- (1) सांगीतिक दृष्टि और (2) काव्यात्मक दृष्टि।

शोध-प्रबंध का तृतीय अध्याय "पं. सियाराम तिवारी का परिचय" है, जिसके अंतर्गत पं.सियाराम तिवारी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, जन्म, शिक्षा, रियाज़ अनुशासन, विवाह, मित्र वर्ग, कार्यक्रम, पुरस्कार एवं मान-सम्मान के साथ-साथ पंडितजी के जीवन की कुछ रोचक घटनाओं तथा मृत्यु आदि का संपूर्ण विवरण दिया गया है।

शोघ-प्रबंध का चतुर्थ और अंतिम अध्याय "पं.सियाराम तिवारी का सांगीतिक योगदान" है, जिसके अंतर्गत, पं.सियाराम तिवारी द्वारा किये गए सांगीतिक योगदान का वर्णन किया गया है, जिनमें उनकी गायकी, कार्यक्रम, शिष्य-परंपरा आदि का वर्णन है। साथ ही, समाज एवं संगीत जगत में ध्रुपद शैली के विकास, प्रचार-प्रसार एवं पुनरोत्थान हेतु पंडितजी द्वारा किये गए अथक प्रयोगों व प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है, जिससे संपूर्ण संगीत जगत प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित है अथवा हो रहा है, जिसे ध्रुरपद-धमार एवं ख़्याल-ठुमरी के परिप्रेक्ष्य में तिवारीजी, तिवारीजी की गायकी, शिक्षण-पद्धति एवं योगदान केअंतर्गत ध्रुरपद का प्रचार-प्रसार एवं लोकप्रियता के रूप में विभाजित किया गया है।

शोध-प्रबंध के अंत में सम्पूर्ण शोध-कार्य का निष्कर्ष "उपसंहार" के अंतर्गत रखा गया है। तदुपरांत सन्दर्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट संलग्न की गई हैं।

www.ignited.in

रुपद गायकी में बिहार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. आप बिहार के योगदान को किस प्रकार रेखांकित करेंगे?

रुपद बिहार के बगैर अधूरा है. दरभंगा घराने के बिना ध्रुपद गायकी की कल्पना भी नहीं कर सकते. दरभंगा के अलावा बिहार में ध्रुपद के कई और भी प्रसिद्ध घराने हुए. दुरूख की बात है कि बिहार एक ऐसा दौर भी आया जब ध्रुपद कहीं खो सा गया था. बाद में इसी बिहार से ऐसे लोग भी हुए, जिन्होंने ध्रुपद को दुबारा से लोकप्रिय बनाया. यही नहीं पखावज, नृत्य, ठुमरी और दादरे की परंपरा बिहार में बेहद समृद्ध रही है. संगीत में बिहार की इतनी महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसे कोई नहीं नकार सकता.

-पं सियाराम तिवारी की ध्रुपद गायन में भूमिका पर आप क्या कहेंगे?

पंडित जी ध्रुपद के अग्रणी गायकों में से एक थे. पूरे भारत में जहां भी ध्रुपद की चर्चा होती है तो पंडित सियाराम तिवारी को नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है. पंडित जी ने अपना सारा जीवन ध्रुपद को समर्पित कर दिया था. उन्होंने ध्रुपद को ऐसे समारोहों में प्रस्तुत किया, जिसने ध्रुपद गायकी को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया. यह समझिए कि यह बेहद जरूरी भी था. वे नामी संगीतज्ञ के साथ ही कर्मयोगी भी थे.

-संगीत की नयी पौध बिहार से बाहर जा रही है, इसके लिए सरकार को क्या करना चाहिए?

बिहार सरकार को इस दिशा में आगे आना चाहिए. वैसे यहां के कलाकार देश भर में नाम कमा रहें हैं. यहां संगीत की नयी पौध को सींचने की आवश्यकता है, ताकि संगीत की पुरानी परंपरा यहां विकसित हो सके. बिहार सरकार को अपनी अपनी बेहतर सांस्कृतिक नीति बनानी चाहिए. शास्त्रीय संगीत के विकास के लिए विशेष प्रयास करने की जरूरत है, ताकि युवा पीढ़ी को इसकी अहमियत बतायी जा सके. विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक संगीत की शिक्षा मुहैया कराने की जरूरत है. संगीत से जुड़ीं मृतप्राय संस्थाओं को दुबारा से जिंदा किया जाना चाहिए. बिहार में कई बड़े संगीत घराने रहें, उन्हें प्रोत्साहित करने से नये लोग संगीत से जुड़ेंगे.

दरभंगा की भौगोलिक स्थिति

बिहार की उत्तरी दिशा में बाघमती नदी के किनारे बसा “दरभंगा” एक जिला एवं प्रमंडलीय मुख्यालय है। भारत के मानचित्र पर यह पूर्व दिशा में एवं बिहार के मानचित्र पर यह राजधानी पटना से पूर्व-उत्तर दिशा में स्थित है। ‘दरभंगा 26°10’12” उत्तरी अक्षांश तथा 85°54’0” पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।’1 बिहार राज्य में कुल 38 जिले हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में किये गये अध्ययन से दरभंगा परम्परा और पं.सियाराम तिवारी के विषय में विभिन्न तथ्य प्राप्त हुए, जिनका विश्लेषण एवं विवेचन विभिन्न अध्यायों में शोधार्थी द्वारा किया गया है, जिससे प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार वर्णित है- शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में किये गये सम्पूर्ण अध्ययन से भारत में बिहार राज्य की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। प्राचीन समय से ही बिहार राज्य का राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से विशेष महत्त्व एवं योगदान देखने को मिलता है। इसी श्रृंखला में बिहार का दरभंगा जिला, जो मूल रूप से घरानेदार संगीत के लिए न केवल उत्तर भारतीय संगीत में, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विशेष और महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ के ब्राह्मण राजाओं के राज्याश्रय में जिस प्रकार का संरक्षण संगीत एवं कलाओं को प्राप्त हुआ, ऐसा संरक्षण अन्यत्र कहीं परिलक्षित नहीं होता। साथ ही दरभंगा घराने के कलाकारों द्वारा संगीत की ऐसी पुष्ट परम्परा का निर्वहन एवं संवर्धन किया गया, जिसमें न केवल परिवार के सदस्य ही सम्मिलित थे, अपितु खुले विचारधारा से इस घराने के दिग्गज गुरुओं ने अन्य लोगों को भी सम्यक रूप से संगीत की शिक्षा प्रदान की। यह भी ध्यान देने योग्य बात है, कि दरभंगा घराने के कलाकारों का विचार आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत[220] तथा स्वाभिमान से परिपूर्ण है। इस घराने का इतिहास दरभंगा में वर्तमान समय से लगभग 250-300 वर्ष पूर्व से मिलता है, परन्तु अध्ययन से स्पष्ट है कि इस घराने के पूर्वजों द्वारा लगभग 15वीं शताब्दी से (वर्तमान से लगभग 700 वर्ष पूर्व) अनवरत संगीत की कठोर साधना एवं सेवा करते आ रहे हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि इस घराने का सीधा संबंध स्वामी हरिदास बाबा से रहा है। वर्तमान में प्रचलित ख्याल आदि के घरानों से दरभंगा घराना अधिक प्राचीन और समृद्ध है। इस घराने के कई कलाकार ऐसे भी हुए, जिन्हें वाग्येकार कहा जा सकता है, जिनमें पं.क्षितिपाल मलिक, पं.राजितराम मलिक, पं.यदुवीर मलिक, पं.महावीर मलिक के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस घराने में जहाँ गायन की विस्तृत वंश एवं शिष्य परम्परा देखने को मिलती है, वहीं वादन की भी वंश एवं शिष्य परम्परा की लम्बी श्रृंखला दृष्टिगोचर है। दरभंगा घराने में दो ग्रंथों की रचना का भी अध्ययन से प्रमाण मिलता है तथा कई अप्रचलित रागों का

www.ignited.in

भी संरक्षण इस घराने में काफी समय तक किया जाता रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

01. लुसेंट बिहार सामान्य ज्ञान, विनय कर्ण, लुसेंट पब्लिकेशन, पटना (बिहार), चतुर्थ संस्करण, 2014

02. शम्भूनाथ मिश्र, सात सुर सत्ताईस दायरे, जगदीश भारद्वाज सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991

03. विजय शंकर मिश्र, अंतर्नाद: सुर और साज, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004

04. अनिता शर्मा, प्राचीन संगीत परम्परा एवं ध्रुपद शैली - एक अध्ययन, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004.

05. विमलकान्त राय चौधरी, अनुवाद - मदनलाल व्यास, भारतीय संगीत कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2003.

06. मांडवी सिंह, भारतीय संस्कृति में कत्थक परम्परा, स्वाति पब्लिकेशन्स् नई दिल्ली, 1990.

07. भरत व्यास, ध्रुपद समीक्षा, समर बहादुर सिंह, सचिव, उ.प्र.संगीत नाटक अकादमी, केसरबाग, लखनऊ

08. गजेन्द्र नारायण सिंह, बिहार की संगीत परम्परा, शारदा प्रकाशन, पटना

Corresponding Author

Diwakar Narayan Pathak*

Principal, Department of Music, Pandit Ugam Pandey College, Motihari, B.R.A. Bihar College, Muzaffarpur

www.ignited.in